ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५७ अंक - ४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र फरवरी (द्वितीय) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

बोध रात्रि (१७ फरवरी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : ४
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: फाल्गुन कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

फरवरी द्वितीय २०१५

अनुक्रम

१. हिन्दी को समाप्त करने का षड़यन्त्र	सम्पादकीय	०४
२. अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनु.....	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१५
४. अवतारवाद का अन्त होगा?	रामनिवास गुणग्राहक	१९
५. पुस्तक-समीक्षा	डॉ. धर्मवीर	२२
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२७
८. जिज्ञासा समाधान-८१	आचार्य सोमदेव	३१
९. स्वामी विवेकानन्द का हिन्दुत्व	नवीन मिश्र	३५
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-४		३७
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

हिन्दी को समाप्त करने का षड़यन्त्र

पिछली सरकारों ने हिन्दी-संस्कृत को योजनाबद्ध रूप से समाप्त करने का कार्य किया। मोदी सरकार के आने से यह षड़यन्त्र अधिकारिक रूप से तो हट गया, परन्तु पिछले साठ वर्षों से जो इस कार्य में लगे हुए थे और आज भी शासन में प्रमुख पदों पर बैठे हैं, उनकी तड़प समझी जा सकती है। वे आज आदेश निर्देश की भाषा छोड़कर परामर्श व समझदारी के बहाने हिन्दी को समाप्त करने के अपने प्रयास को बढ़ाने लगे हैं। मनमोहनसिंह के प्रधानमन्त्रीत्व काल में हिन्दी के बिगाड़ का सर्वाधिक सरकारी प्रयास हुआ। मनमोहनसिंह की सरकार में हिन्दी के प्रयोग के लिए तीन ऐसे व्यक्ति उत्तरदायी थे जो हिन्दी के विरोधी तो है ही,

परन्तु उनको हिन्दी आती भी नहीं थी, उनमें प्रथम मनमोहनसिंह स्वयं थे। वे उर्दू, अंग्रेजी पढ़े होने से उनका हिन्दी भाषण सदा उर्दू में लिखा होता था, जिसे वे लालकिले से लेकर सम्मेलनों तक में पढ़ते थे, अन्यथा उनकी भाषा मन-वचन-कर्म से अंग्रेजी थी। दूसरी थी सोनिया गाँधी, जिन्हें हिन्दी नहीं आती थी और वे अपना हिन्दी भाषण रोमन में लिखकर पढ़ती थीं, यह उनका भाषा का प्रेम नहीं, विवशता थी। तीसरे व्यक्ति थे चिदम्बरम, जिन्हें हिन्दी से चिड़ थी। वे हिन्दी में न भाषण देते थे न बातचीत ही करते थे। चिदम्बरम को हिन्दी का महत्त्व चुनाव में याद आया यदि वे हिन्दी में भाषण दे सकते तो वह भी प्रधानमन्त्री पद के प्रत्याशी होते। इन्हीं चिदम्बरम के गृहमन्त्रीत्व काल में श्री मनमोहनसिंह की अध्यक्षता में संविधान के विपरीत जाकर हिन्दी में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों को भरने की छूट दी गई। इन्हीं के कारण हिन्दी स्वरूप बिगाड़कर दूरदर्शन और समाचार पत्रों में हिन्दी के स्थान पर उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का और हिन्दी को रोमन में लिखने का देशद्रोही प्रयास प्रारम्भ हुआ। आज सारे समाचार पत्र और दूरदर्शन ऐसे काम करते हैं जैसे सारे भारतीयों को अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि सिखाने का ठेका इन्हीं ने ले रखा है। सरकार के स्तर पर यह अभियान भले ही ठण्डा पड़ गया हो परन्तु सरकारी विद्वान् और तथाकथित विद्वान् अंग्रेजी के प्रभाव को बनाये रखने और उसकी गुणवत्ता सिद्ध करने में लगे हुए हैं। स्वतन्त्रता के साथ ही पराधीनता को बनाये रखने के जो निर्णय हुए उनमें सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में अंग्रेजी की अनिवार्यता भी है।

सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग की माँग करने वाली जनहित याचिका का केन्द्र सरकार ने विरोध किया। जिसमें याचिकाकर्त्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि संविधान के अनुच्छेद ३४३ में वर्णित प्रावधानों के अन्तर्गत हिन्दी को उच्च न्यायपालिका में राजभाषा बनाया जाये।

देशभर के २४ उच्च न्यायालयों एवं सर्वोच्च न्यायालय में हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव करने वाली जनहित याचिका को केन्द्र सरकार ने एक शपथ पत्र प्रस्तुत करते हुए अस्वीकार कर दिया है।

सर्वोच्च न्यायालय में यह जनहित याचिका शिव सागर तिवारी अधिवक्ता द्वारा दायर की गयी थी जिसमें कहा गया कि संविधान के अनुच्छेद ३४८ में कही गयी यह बात कि उच्च न्यायालय की राजभाषा अंग्रेजी होगी, संविधान का उल्लंघन है। यह वादी-प्रतिवादियों द्वारा नहीं समझी जाती है। इस सिलसिले में न्यायमूर्ति दत्तू और बोबड़े की खण्डपीठ ने केन्द्र सरकार को नोटिस दिया था।

इसके प्रत्युत्तर में गृह मन्त्रालय के राजभाषा विभाग ने उच्च न्यायपालिका में भाषा बदलकर हिन्दी करने का प्रस्ताव वर्ष २००४ के विधि आयोग के २१६वीं रिपोर्ट पर भरोसा करते हुए अस्वीकार कर दिया। रिपोर्ट में सांविधिक प्रावधानों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया और इस सम्बन्ध में उच्च न्यायपालिका के वरिष्ठ सदस्यों के विचारों की ओर भी ध्यान दिया गया। इसमें कहा गया है-

''किसी भी वर्ग के लोगों पर कोई भाषा उनकी इच्छा के विपरीत न थोपी जाए क्योंकि इससे हानि होने की सम्भावना है, उच्च न्यायपालिका में न्यायाधीशों के लिए निर्णय करने की प्रक्रिया में भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। न्यायाधीशों को दोनों पक्षों की प्रस्तुति को सुनना और समझना होता है और उनके सम्यक् समायोजन के लिए कानून का प्रयोग करना होता है। उच्च न्यायपालिका में प्राय: अंग्रेजी और अमरीकन पुस्तकों एवं अभियोग विधि प्रकरणों पर आधारित है।''

इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि न्यायपालिका में अंग्रेजी के प्रयोग से न्यायाधीश के एक उच्च न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानान्तरण के समय सुविधा

रहती है और यही बात उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय में स्थानान्तरण के समय भी होती है।

केन्द्र सरकार ने अपने शपतथ-पत्र के अनुच्छेद ३४८ के उपभाग (२) में कही बात को सन्दर्भित किया है जिसके अनुसार राष्ट्रपति की पूर्व सहमति प्राप्त करके उस राज्य का राज्यपाल उस राज्य उच्च न्यायालय में हिन्दी के प्रयोग को अधिकृत कर सकता है।

जो मोदी शपथ मञ्च से संयुक्त राष्ट्र के मञ्च तक हिन्दी की महिमा गा रहे हैं, उनकी सरकार का विभाग हिन्दी की जड़ खोदने में लगा हुआ है। यह एक दासता का पोषक और देश के लिये लज्जित करने वाला कार्य है। मोदी सरकार को इस घटना का संज्ञान में लेकर तत्काल इसका सुधार करना चाहिए।

इस प्रकार का प्रयास अनेक स्तर पर चल रहा है। इसको इस बात से समझा जा सकता है कि पिछले दिनों दैनिक भास्कर समाचार पत्र में एक प्रसिद्ध स्तम्भ लेखक ने बड़े ही भोलेपन से हिन्दी को रोमन में लिखने का प्रस्ताव कर डाला। लेखक बड़ी दूर की कौड़ी लाया है, वह कहता है- अंग्रेजी बिना प्रोत्साहन के बड़ी तेजी से बढ़ रही है, उससे टक्कर लेने के लिए एक ही उपाय है- हिन्दी को रोमन में लिखा जाय। सम्भवत: लेखक समझता है कि हिन्दी रोमन में लिखते ही हिन्दी अंग्रेजी बन जायेगी जैसे भारतीय पेण्ट पहनकर अंग्रेज हो गये। लेखक का विचार है कि हम नवयुवकों पर हिन्दी थोपते हैं वह विद्रोह करता है ऐसे में हिन्दी को बचाने के लिए हिन्दी को रोमन में लिखना चाहिए। यह एक विडम्बना की बात है, आप कहते हैं नवयुवक हिन्दी के प्रति विद्रोह का भाव रखता है। मूल बात है आपने उसे हिन्दी सिखाई नहीं, वह हिन्दी नहीं बोलता या हिन्दी नहीं जानता, इसमें उसका क्या दोष? जब अंग्रेजी जो उसकी भाषा नहीं है वह आप उसे सीखने के लिए बाध्य करते हैं तो वह सीख जाता है, फिर वह हिन्दी नहीं सीख सकता- यह कथन तो इस देश के युवा का अपमान है। मोबाइल, कम्प्यूटर पर वह अंग्रेजी का उपयोग करने के लिए विवश है। यदि सरकार चाहती तो प्रारम्भ से ही हिन्दी का विकल्प दे सकती थी परन्तु सरकार हिन्दी को समाप्त कराना चाहती थी, इसलिये युवकों ने अंग्रेजी सीखली। इसमें सरकार दोषी है, युवक नहीं।

आज हिन्दी को रोमन में लिखकर आप क्या अनुभव कराना चाहते हैं? यदि आप हिन्दी रोमन में लिखते हैं और हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी उर्दू के शब्दों का उपयोग करते हैं तो इसके पीछे केवल दो कारण हो सकते हैं। पहला आपकी दृष्टि में नागरी लिपि या हिन्दी शब्दों में आपके भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं है या आप उन शब्दों से परिचित नहीं हैं। दूसरा कारण है आपको अपनी भाषा और लिपि का प्रयोग करने में शर्म का अनुभव होता है। तीसरा तो कोई कारण हो नहीं सकता। लेखक ने ऐसे देशों का उदाहरण दिया है जिन्होंने अपने देश से अपनी लिपि को विदाई देकर अपनी भाषा को रोमन लिपि दी। लेखक को यह ध्यान नहीं है कि संसार की लिपियों में नागरी लिपि तथा भाषाओं में संस्कृत भाषा सबसे अधिक वैज्ञानिक है। वैज्ञानिक और समर्थ भाषा व लिपि को छोड़कर अवैज्ञानिक लिपियों की वकालत करना अपनी अज्ञानता को ही प्रकाशित करना है। जो लोग अंग्रेजी की वकालत करते हैं वे भूल जाते हैं कि अंग्रेजी को बढ़ाने और भारतीय भाषाओं को नष्ट करने के जितने प्रयत्न इन साठ वर्षों में सरकार द्वारा किये गये हैं उसका दसवाँ हिस्सा भी भारतीय भाषाओं के लिये किया होता तो आज इस देश का युवक ज्ञान-विज्ञान सीखने में कितना आगे बढ़ चुका होता, यह एक वैज्ञानिक देश बन चुका होता।

आज भाषा के पढ़ने की बात भाषा की योग्यता नहीं है अपितु भाषा को आजीविका से जोड़ना है। आज अंग्रेजी पढ़ने वाले को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और अंग्रेजी पढ़े-लिखे को आजीविका के अवसर अधिक सुलभ हैं इसलिये अंग्रेजी पढ़ी जाती है। यह भाषा न तो वैज्ञानिक, न सरल, न हमारे लिए किसी तरह का गौरव देने वाली है। हम समझते हैं कि अंग्रेजी पढ़कर यूरोप अमेरिका में सुविधा से काम कर सकते हैं, बहुत धन कमा सकते हैं, यह बात मान कर उन्हें यूरोप में बसाना चाहते हैं पर बाहर जाने वालों की कितनी भी बड़ी संख्या हो वह भारत की जनसंख्या का एक दो प्रतिशत ही तो हो सकती है। फिर अठानवे प्रतिशत लोगों का गला क्यों घोट रहे हैं? प्रतिभा का विकास जो मातृभाषा में होता है, वह विदेशी भाषा में कभी नहीं हो सकता, फिर भी हम स्वयं पर अत्याचार करने के लिये विवश हैं। यह दासता हम क्यों नहीं छोड़ना चाहते। जो लोग आज हिन्दी को रोमन में लिखकर वैश्विक बनना चाहते हैं उनके लिये कभी विनोबा भावे द्वारा दिये परामर्श का स्मरण करना चाहिए। विनोबा भावे ने आज से पचास वर्ष पहले कहा था हमें एशिया महाद्वीप की भाषाओं को नागरी लिपि देने का प्रयास करना चाहिए। इससे पूरे एशिया महाद्वीप को मजबूत बना

सकते हैं और यूरोप को टक्कर दे सकते हैं। ये अन्तर है सोच का। एक व्यक्ति अपने गौरव को विश्व में स्थापित करने का इच्छुक है, एक भिखारी बनकर सेठ के साथ दिखना चाहता है। स्तम्भकार मनमोहनसिंह की सोच को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर दीखता है। इस षड़यन्त्र को समझने के लिए एक प्रसंग याद रखना उचित होगा। जब मनमोहनसिंह सरकार ने हिन्दी में अंग्रेजी उर्दू शब्दों को भरने की संविधान विरुद्ध योजना को स्वीकृति दी, उसकी सबसे अधिक प्रशंसा पेंगुइन प्रकाशन ने की थी। उसने करोड़ों रुपये खर्च कर सम्मेलन करके सरकार के इस प्रयास की प्रशंसा की थी, इतना ही नहीं उसने यह भी कहा था कि यह प्रयास बहुत पहले स्वतन्त्रता के साथ ही हो जाना चाहिए था। आज भी विदेशी शक्तियाँ इस देश की औपचारिक भाषा के रूप में अंग्रेजी को इस देश में स्थापित देखना चाहती हैं। यह उन्हीं का विचार और उनकी ही योजना है। हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों की भरमार करके इसके भाषाई स्वरूप को समाप्त कर दिया जाये तथा इस देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं को हिन्दी सहित रोमन लिपि दी जाये, जिससे इस देश की आत्मा ही समाप्त हो जाये, हम अपनी स्वतन्त्रता को भूल जाये और हमें उसका महत्त्व का कभी बोध न हो सके।

जो लोग हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी को अधिक समर्थ और योग्य मानते हैं और देवनागरी की तुलना में रोमन का अधिक स्मरण करके उसे सक्षम समझते हैं, वे तुलना करके देखें। हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के पीछे हजारों वर्ष का अनुभव और अनुसन्धान है। इसकी वैज्ञानिकता की तुलना करने का प्रयास करें तो उच्चारण की सटीकता और अर्थ प्रकाशन का सामर्थ्य किसी भी विश्व भाषा से अधिक है। आज जो अंग्रेजी की स्पेलिंग शुद्ध उच्चारण के लिए प्रतिष्ठा की लड़ाई लड़ते हैं, उन्हें इस अंग्रेजी से होने वाली मूर्खता का तो बोध भी नहीं होता। अभी दूरदर्शन समाचारों पर तलपदे का समाचार देते हुए। सारे अंग्रेजी पढ़े उद्घोषक तलपदे को तलपडे-तलपडे चिल्ला रहे थे।

रेल्वे में जितनी घोषणाएँ होती हैं, वे अंग्रेजी पढ़कर हिन्दी को भ्रष्ट करने वाली होती है- बांदीकुई को बन्दीकुई चिल्लाते हैं, घर घोड़ा को धारा धोरा हम अंग्रेजी से अनुवाद करके बोलते हैं और उससे होने वाली मूर्खता को हिन्दी के माथे पर मढ़ते हैं। इस प्रकार के प्रयत्न का बलपूर्वक विरोध करके अपनी भाषा और अपने गौरव को स्थापित करना होगा। जो अंग्रेजी का प्रयोग चाहते हैं वे उसका उपयोग कर उनपर हिन्दी न थोपी जाय परन्तु हिन्दी भाषा और भारतीय भाषा बोलने वालों पर अंग्रेजी क्यों थोपी जा रही है। इस अन्याय का निराकरण होना चाहिए। यह केवल हमारी भाषा के शब्दों में सामर्थ्य है जिसे ऋषियों ने कहा है-

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः।
सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुक् भवति।।

- धर्मवीर

अच्छी कामना करें

- मोहनचन्द तंवर

निर्भय, निर्मल, निर्विकार व संशयहीन बने जीवन,
द्वेषरहित, सद्भाव, विनयव्रत, दुर्विषय हीन बने जीवन,
दुराग्रही, लपट, लोभी ना वंचक दीन बने जीवन,
जन्मदाता, पालनकर्ता ना स्वार्थ लीन बने जीवन।
जो भी जीवन में पाया वो बांट चूंट निर्वाह करें,
स्वाभिमानमय हो जीवन ना मृत्यु की परवाह करें,
धनदौलत, सुख, सम्पन्नता की इतनी भी ना चाह करें,
रोग, शोक, निर्धनता दुर्दिन में भी हम ना आह करें।
रुढ़ी की हम छोड़ लकीरें, नव पथ का निर्माण करें,
लक्ष्य बने सटीक हमारा तन धनुष मन बाण करें,
अन्याई, अत्याचारी के मनसूबे निष्प्राण करें,
दलितदीन दु:खियों वंचित को भय से मिल हम त्राण करें।
संप्रदाय की गिरें दीवारें एक सत्य का सूर्य उदय हो,
हो प्रकाश जन-जन के मन में अंधकार का प्रतिपल क्षय हो,
विश्वासों की लिये संपदा विचरे दुनिया में निर्भय हो,
खोया गौरव पुनः प्राप्त कर आर्यवर्त तेरी जय-जय हो।
नवयुग व नवपीढ़ी खातिर चरणचिन्ह हम निर्मित कर दें,
जिन पर चल कर ये भविष्य की आशा सबको गर्वित कर दे,
करें गलित का नाश, प्राण वायु से जग आवर्तित कर दें,
जब भी मांगे राष्ट्र हंसे और अपना शीश समर्पित कर दें।
बीज बने ब्रह्मचारी और गृहस्थ श्रद्धामय कर दे तर्पण
वानप्रस्थ संचय करके संन्यासी बन कर दें वितरण
त्याग, तितीक्षा के चोले में देखें मन मन्दिर का दर्पण,
जो भी उसके पास जमा हो, वो सब जग को कर दे अर्पण।
वेदों के पथ पर चलकर उत्कर्ष तभी पा सकते हैं,
छोड़ें पोगा पंथी तो हम हर्ष तभी पा सकते हैं,
जीवन क्या? कैसे जीना? निष्कर्ष तभी पा सकते हैं,
प्रतिभा, पल-क्षण, दिन, महिने हर वर्ष तभी पा सकते हैं।

-ई-२०४, शास्त्री नगर, अजमेर

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण.....

अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम्-४

- स्वामी विष्वङ्

पिछले अंक का शेष भाग.....

महर्षि आगे लिखते हैं-

उक्ता प्रसुप्तिर्दग्धबीजानाम-प्ररोहश्च।

अर्थात् दो प्रकार की स्थितियों में क्लेश उभरते नहीं हैं। एक स्थिति प्रसुप्त अवस्था की है और दूसरी स्थिति दग्धबीजभाव की है। इन दोनों ही स्थितियों में क्लेश कार्यरत नहीं होते हैं। उपरोक्त दोनों स्थितियों में दग्धबीजभाव की अवस्था अत्युत्तम है। ऐसी अवस्था को प्रत्येक योगाभ्यासी को प्राप्त करना चाहिए। जिसे पाकर मनुष्य अपने प्रयोजन को पूर्ण कर सकता है अर्थात् 'कृतकृत्य' हो सकता है। प्रसुप्त अवस्था, उदार अवस्था और विच्छिन्न अवस्था की अपेक्षा उत्तम है क्योंकि जिस अवस्था में लम्बे काल तक क्लेश उभरते नहीं हैं। परन्तु कभी न कभी उभरने का अवसर अवश्य रहता है। इसलिए उन क्लेशों को दग्धबीजभाव तक पहुँचाने के लिए कमजोर करना आवश्यक है। इसी कारण महर्षि आगे लिखते हैं-

तनुत्वमुच्यते-प्रतिपक्षभावनोपहताः क्लेशास्तनवो भवन्ति।

अर्थात् क्लेशों के तनुत्व के विषय में समाधान करते हुए ऋषि कहते हैं कि क्लेशों को रोकने वाले विरोधी भाव (तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियायोग) को अपना कर योगाभ्यासी बार-बार क्लेशों पर मानो प्रहार करता रहता है। अभिप्राय यह है कि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश जब योगाभ्यासी को विषय भोगों की ओर प्रवृत्त करते हैं तब उस प्रवृत्ति को रोकने के लिए योगाभ्यासी तप का अनुष्ठान करता है अर्थात् एक ओर विषय अपनी ओर आकृष्ट करते हैं, तो दूसरी ओर योगाभ्यासी उनकी ओर आकृष्ट न होकर उनको सहन करता है। बहुत कुछ सहन करते हुए भी बीच-बीच में पुनः-पुनः आकर्षण उत्पन्न होने लगता है, तो विशेष रूप से स्वाध्याय करके उस प्रवृत्ति को रोके रखता है। तप, स्वाध्याय के साथ-साथ ईश्वरप्रणिधान करते हुए पूर्ण रूप से विषय भोग के आकर्षण को रोक देता है।

उपरोक्त प्रक्रिया से बार-बार क्रियायोग का अभ्यास कर-करके योगाभ्यासी पाञ्चों क्लेशों को कमजोर बना देता है। इस कमोजरपन को ही सूत्रकार व भाष्यकार '**तनु**' शब्द से कथन करते हैं। क्लेशों की तनु अवस्था क्रियायोग पर निर्भर करती है अर्थात् जिस प्रतिशत में क्रियायोग का पालन योगाभ्यासी करता है उसी अनुपात में क्लेश तनु होते हैं। क्लेश तनु होकर भी कार्यरत होते हैं। हाँ, जिस प्रकार बिना तनु वाले क्लेश जिस तीव्रता से कार्य करते हैं। उसी तीव्रता से तनु वाले क्लेश कार्य नहीं करते हैं परन्तु कार्य तो करते ही हैं। इसलिए क्लेशों को इतना कमजोर बनाना चाहिए कि वे कार्य करने में असमर्थ हो जाये। यहाँ पर कोई यह न समझे कि यदि कार्य करने में असमर्थ होते हैं, तो तनु और दग्धबीजभाव में क्या अन्तर रहेगा? इसका समाधान यह है कि तनु वाले क्लेश यद्यपि कार्य करने में असमर्थ हैं परन्तु कभी भी अपने कमजोरपन से उभर कर बलवान् बन सकते हैं और पुनः कार्यरत हो सकते हैं। परन्तु दग्धबीज वाले क्लेश भी कार्य करने में असमर्थ होते हैं, किन्तु वे कभी भी कार्यरत नहीं हो सकते हैं। क्यों? क्योंकि उनमें कार्य करने का सामर्थ्य सर्वथा दग्ध=जल गया है। वे कभी अंकुरित नहीं हो सकते। जिसप्रकार जले-भुने हुए चने अंकुरित नहीं होते हैं उसी प्रकार जले-भुने हुए क्लेश कभी कार्यरत नहीं हो सकते। इसलिए तनु और दग्धबीजभाव, इन दोनों में कार्यरत न होने की समानता होते हुए भी बहुत अन्तर है। इसलिए दग्धबीजभाव वाले क्लेशों की सर्वोत्तमता तनु वाले क्लेशों की अपेक्षा सर्वाधिक है।

यहाँ पर एक बात और समझनी चाहिए कि महर्षि ने '**प्रतिपक्षभावनोपहताः**' शब्द का प्रयोग किया है। प्रतिपक्ष भावना का अभिप्राय है विरोधी भावना। किससे विरोधी भावना, क्लेशें से विरोधी भावना। क्लेशों को रोकने वाले जितने भी उपाय हैं, वे सब प्रतिपक्ष भावना वाले कहे जायेंगे। इसलिए यहाँ पर प्रतिपक्ष भावना से केवल तप, स्वाध्याय व ईश्वरप्रणिधान रूपी क्रियाओं को ही नहीं लेना चाहिए। अपितु जितने भी योग के साधन योगदर्शन में बताये गये हैं, उन सब को यहाँ पर ग्रहण करना चाहिए। हाँ, प्रसंग के अनुसार यहाँ क्रियायोग को ग्रहण किया गया है। इससे अन्य साधनों का निवारण नहीं होता है। जो क्लेश प्रसुप्त दशा में हैं, उन क्लेशों की वर्तमान काल में इतनी

समस्या नहीं है। जितनी समस्या उदार वाले और विच्छिन्न वाले क्लेशों की है। इसलिए वर्तमान में प्रवृत्त होने वाले क्लेशों को तनु करने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस कारण योगाभ्यासी का विशेष कर्त्तव्य बनता है कि वह क्लेशों को अधिक से अधिक कमजोर करे। जिससे योगाभ्यासी विषय भोगों से निवृत्त होकर मन को ईश्वर में एकाग्र कर सके। उसके लिए क्रियायोग का निरन्तर अभ्यास करना होगा। बिना क्रियायोग के निरन्तर अभ्यास के क्लेश तनु नहीं हो पायेंगे।

महर्षि वेदव्यास क्लेशों की विच्छिन्न अवस्था की परिभाषा बताते हुए कहते हैं-

तथा विच्छिद्य विच्छिद्य तेन तेनऽऽत्मना पुनः पुनः समुदाचरन्तीति विच्छिन्नाः।

अर्थात् ये पाञ्चों क्लेश बीच-बीच में टूट-टूट कर भी बाद में फिर से अपने उसी-उसी रूप से फिर से प्रकट होते रहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि पाञ्चों क्लेश एक ही काल में व्यवहार में नहीं आ सकते हैं। इसलिए ये क्लेश बदल-बदल कर प्रकट होते रहते हैं। उदाहरण के लिए किसी वस्तु में राग उत्पन्न हो गया तो वह राग सदा के लिए वर्तमान में नहीं रहता है। कोई ऐसा प्रसंग आ जाता है कि व्यक्ति को क्रोध आ जाता है, उस स्थिति में राग दब जाता है। जब कभी दुबारा उसी वस्तु में (जिसमें पहले राग हुआ था) राग होता है, तो उसी स्तर का राग पुनः होता है। इस प्रकार पाञ्चों क्लेशों के विषय में समझना चाहिए। इसी बात को स्पष्ट करते हुए ऋषि लिखते हैं **'कथम्'**= कैसे ये क्लेश बदल-बदल कर दुबारा प्रकट होते हैं? समाधान के रूप में ऋषि कहते हैं- **'रागकाले क्रोधस्यादर्शनात्।'** अर्थात् जब कभी मनुष्य किसी वस्तु या व्यक्ति में राग उत्पन्न करता है उसी काल में क्रोध के न देखा जाने से पता लगता है कि सभी क्लेश एक काल में प्रवृत्त नहीं होते हैं। इसलिए ऋषि कहते हैं कि-

न हि रागकाले क्रोधः समुदाचरति।

अर्थात् जिस समय राग का व्यवहार चल रहा हो उसी काल में क्रोध का व्यवहार नहीं चल सकता।

यहाँ पर महर्षि वेदव्यास एक विशेष बात करते हुए कहते हैं कि-

रागश्च क्वचिद् दृश्यमानो न विषयान्तरे नास्ति।

अर्थात् कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति में राग कर रहा है, तो इससे ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उससे अन्य व्यक्तियों व वस्तुओं में उसका राग नहीं है। इससे यह पता लगता है कि संसार में कोई ऐसी वस्तु या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है। जिसमें मनुष्य को राग उत्पन्न नहीं हो सकता हो अर्थात् सभी वस्तुओं या व्यक्तियों में राग अवश्य हो सकता है। क्योंकि वर्तमान में जिसमें राग है वह राग बता रहा है कि अन्यों में भी राग हो सकता है। यदि अन्यों में राग नहीं हो सकता, ऐसा कोई कहे, तो यह असम्भव है क्योंकि जिस अविद्या रूपी बीज के कारण वर्तमान में जिससे राग हो रहा है। वह अविद्या रूपी बीज जबतक रहेगा तबतक अन्यों में भी राग अवश्य उत्पन्न होगा। इसलिए महर्षि कहते हैं कि आज अमुक वस्तु में राग है, तो भविष्य में अन्यों में भी राग अवश्य उत्पन्न होगा। यह सिद्धान्त नहीं बदल सकता। इसलिए महर्षि ने एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जिससे उपरोक्त बातों की पुष्टि हो जाती है। उदाहरण देते हुए ऋषि कहते हैं कि-

नैकस्यां स्त्रियां चैत्रो रक्त इत्यन्यासु स्त्रीषु विरक्त इति।

अर्थात् मान लीजिये कि एक चैत्र नाम वाला व्यक्ति किसी एक स्त्री में आसक्त है। इससे यह नहीं कह सकते कि उस स्त्री से भिन्न और जो स्त्रियाँ हैं उनमें उस व्यक्ति की आसक्ति नहीं होती है। ऐसा कभी भी सम्भव नहीं हो सकता।

इस सम्बन्ध में ऋषि कहते हैं कि ऐसा सम्भव इसलिए नहीं हो सकता क्योंकि-

किन्तु तत्र रागो लब्धवृत्तिरन्यत्र तु भविष्यद् वृत्तिरिति।

अर्थात् जिस समय जिस स्त्री में वह आसक्त है, वह राग वर्तमान काल में है। उसी काल में अन्य स्त्रियों के प्रति आसक्त कैसे हो सकता है क्योंकि एक समय एक व्यक्ति में ही असक्त हो सकता है। हाँ, अन्य स्त्रियों में वह भविष्य में कभी भी आसक्त हो सकता है। भविष्य में कब होगा यह कहना कठिन होगा परन्तु यह निश्चित है कि कभी न कभी अवश्य आसक्त होगा, ऐसा समझना चाहिए। भविष्य में आसक्त होने वाला राग किस रूप में रहेगा। इस बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि कहते हैं-

स हि तदा प्रसुप्ततनुविच्छिन्नो भवति।

अर्थात् भविष्य में होने वाला वह राग या तो सोया (प्रसुप्त) हुआ है या कमजोर (तनु) है अथवा दबा (विच्छिन्न) हुआ है। वर्तमान में जो राग जिस स्त्री में उदार (वर्तमान काल में) अवस्था में है। उस स्त्रीत्व वाला राग

किसी भी स्त्री के प्रति भविष्य में उभर सकता है। किसी स्त्री के विषय में वह राग प्रसुप्त है जो इस वर्तमान जन्म में भी कभी उभर न सके, तो किसी न किसी जन्म में उभरेगा। चाहे एक जन्म में या अनेक जन्मों के पश्चात् अथवा यदि कोई मोक्ष में नहीं गया हो, तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष के बाद या दो-तीन सृष्टियों के पश्चात् या अनेक सृष्टियों के पश्चात्। कहने का अभिप्राय है कि किसी न किसी काल में वह राग उभर सकता है। यहाँ पर महर्षि ने केवल राग को लेकर उदाहरण दिया है। इसी प्रकार द्वेष आदि अन्य क्लेशों के विषय में भी समझना चाहिए। महर्षि ने '**अन्यत्र तु भविष्यद् वृत्तिरिति**' ऐसा कह कर स्पष्ट किया है कि जो एक क्लेश जिस किसी वस्तु या व्यक्ति में प्रवृत्त हो रहा हो वह क्लेश उस वस्तु या व्यक्ति से भिन्न जिस किसी में भी प्रवृत्त हो सकता है, इसको झुठलाया नहीं जा सकता। इसलिए कोई ऐसा नहीं समझे कि मेरा राग या द्वेष आदि केवल अमुक-अमुक में ही है और अन्यों में नहीं है या भविष्य में भी नहीं होगा, ऐसा कहना अनुचित होगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक क्लेश की कितनी व्यापकता है।

प्रसुप्त, तनु व विच्छिन्न अवस्थाओं की परिभाषाएँ बताकर क्रम प्राप्त उदार अवस्था की परिभाषा करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

विषये यो लब्धवृत्तिः स उदारः।

अर्थात् जो क्लेश किसी भी विषय के प्रति व्यवहार (वर्तमान) में प्रवृत्त होता है, तो उसे उदार नाम से कहते हैं। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार कब कौनसा क्लेश व्यवहार में आता है, यह उस व्यक्ति विशेष पर आधारित है और जिस वस्तु या व्यक्ति के प्रति जो क्लेश प्रवृत्त होता है, उसके ऊपर निर्भर करता है। पाञ्चों क्लेशों में कभी अविद्या व्यवहार में आती है, तो कभी अस्मिता व्यवहार में आती है। कभी राग, कभी द्वेष और कभी अभिनिवेश व्यवहार में आता है। ऐसा कोई नियम नहीं है कि पहले अविद्या व्यवहार में आती है, उसके बाद अस्मिता, उसके बाद राग, उसके बाद द्वेष व अभिनिवेश। बिना क्रम के कोई भी क्लेश कभी किसी को भी ध्यान में रख कर उत्पन्न हो सकता है। यह नियम भी नहीं है कि एक क्लेश अब वर्तमान अवस्था में है, तो दुबारा वहीं क्लेश वर्तमान न हो कर अन्य क्लेश वर्तमान में होगा। फिर कैसे? एक ही क्लेश बार-बार वर्तमान हो सकता है अर्थात् एक ही क्लेश लम्बे काल तक बार-बार वर्तमान में आता रहता है। कोई-कोई क्लेश जैसे अभिनिवेश क्लेश किसी-किसी को कम मात्रा में उभरता है। किसी को द्वेष कम मात्रा में उभरता है। अलग-अलग स्तर वाले व्यक्तियों के अनुसार अलग-अलग प्रकार के क्लेश व्यवहार में कम या अधिक मात्रा में उभरते रहते हैं। पाञ्चों क्लेशों में जो क्लेश उभर कर वर्तमान काल में प्रवृत्त होता है। उस वर्तमान काल में रहने वाली क्लेश की अवस्था को 'उदार' शब्द से परिभाषित किया है।

महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि-

सर्व एवैते क्लेशविषयत्वं नातिक्रामन्ति।

अर्थात् ये जो पाञ्चों विभाग (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश) हैं ये सब क्लेशपन को त्याग नहीं कर सकते अर्थात् इन सब विभागों में क्लेशत्व की ही विद्यमानता है। क्लेशत्व से रहित कोई विभाग नहीं है। यदि सभी विभागों में क्लेशत्व की विद्यमानता है, तो फिर-

कस्तर्हि विच्छिन्नः प्रसुप्ततनुरुदारो वा क्लेश इति।

अर्थात् ये सभी क्लेशपन को नहीं छोड़ते हैं, तो यह क्लेश प्रसुप्त है, तनु है, विच्छिन्न है, उदार है। इस प्रकार के भेद करने का क्या प्रयोजन है? फिर तो एक ही अवस्था रखो- एक ही क्लेश कहो अलग-अलग क्लेश क्यों कहते हो? एक ही क्लेश कहना चाहिए। चाहे उसका नाम कोई भी रखो परन्तु क्लेश अलग-अलग नहीं होने चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर ही प्रश्न किया जा रहा है कि आप अलग-अलग क्लेश न कहकर एक क्लेश कहे। इसका समाधान करते हुए महर्षि कहते हैं कि-

उच्यते सत्यमेवैतत् किन्तु विशिष्टानामेवैतेषां विच्छिन्नादित्वम्।

अर्थात् आपका प्रश्न उचित-यथार्थ-सत्य है क्योंकि पाञ्चों विभागों में क्लेशत्व समान रूप से विद्यमान होने से जाति के रूप में एक ही क्लेश कहा जा सकता है। परन्तु क्लेशत्व की समानता होते हुए भी अस्मिता, राग, द्वेष व अभिनिवेश एक दूसरे से पृथक् करते हैं। जो अस्मिता की स्थिति है वह राग की नहीं है और जो राग की है वह द्वेष की नहीं है। ऐसा ही परस्पर पाञ्चों एक दूसरे से पृथक् हैं। सब के अलग-अलग भाव होते हुए भी सभी क्लेशपन को नहीं छोड़ते हैं। क्लेशपन के कारण जाति के रूप में एक है परन्तु अलग-अलग भावों के कारण (ईकाई) के रूप में एक न होकर अलग-अलग हैं, ऐसा समझना चाहिए। यदि ऐसा नहीं समझते हैं, तो राग को द्वेष मानना होगा और द्वेष

को राग समझना होगा। ऐसा ही राग को अविद्या अस्मिता और अभिनिवेश मानना होगा। ऐसा मानने पर व्यवहार नहीं हो सकता। इसलिए जाति के रूप में एक माना जाये और ईकाई के रूप में अलग-अलग मानना चाहिए।

क्लेशों के न रहने का कारण और क्लेशों के बने रहने का कारण बताते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

यथैव प्रतिपक्षभावातो निवृत्तस्तथैव स्वव्यञ्जकाञ्जनेनाभिव्यक्त इति।

अर्थात् जिसप्रकार से प्रतिपक्ष भावना से क्लेश समाप्त होते हैं उसीप्रकार क्लेश अपने उद्‌बोधक कारण के उपस्थित होने पर कार्यरत होते हैं। यहाँ पर महर्षि ने प्रतिपक्ष भावना को क्लेशों के समाप्ति का कारण बताया है। प्रतिपक्ष भावना का अभिप्राय है विरोधी भावना। क्लेशों को रोकने वाले जितने भी उपाय- यम, नियम आदि योग के अंग हैं, वे सब यहाँ पर ग्रहण होते हैं। विशेष रूप से प्रारम्भिक योगाभ्यासी के लिए क्रियायोग महत्त्वपूर्ण साधन है। जिससे साधक क्लेशों को कमजोर (तनु) कर-करके नष्ट कर सकता है। योगाभ्यासी का जैसा-जैसा स्तर बनता जाता है वैसे-वैसे उपाय को अपनाता हुआ क्लेशों को कमजोर करता जाता है। क्रियायोग की उत्कृष्ट अवस्था बन जाने पर विवेक वैराग्य की ओर बढ़कर क्लेशों को इतना कमजोर बना देता है कि वे क्लेश कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में प्रसंख्यान रूपी तत्त्वज्ञान से क्लेशों को नष्ट कर देता है। प्रतिपक्ष भावना कारण है और उससे उत्पन्न विवेक-वैराग्य कार्य हैं परन्तु कार्य कारण को एक बना कर यहाँ पर क्लेशों की निवृत्ति बताई गई है।

यदि साधक प्रतिपक्ष भावना को नहीं अपनाता है, तो क्लेश अपने उद्‌बोधक कारण- रूप, रस, गन्ध आदि विषय और देश, काल, परिस्थिति, अलग-अलग योनियाँ और विशेष रूप से मनुष्य की अलग-अलग अवस्थाएँ (बाल्य, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध) आलम्बन के रूप में उपस्थित हो जाते हैं तब क्लेश प्रकट होने लगते हैं। यदि साधक क्लेशों को प्रकट होने नहीं देना चाहता है, तो प्रतिपक्ष भावना को अपनाना चाहिए। बिना प्रतिपक्ष भावना के क्लेश नष्ट नहीं हो सकते। इसलिए क्लेशों को नष्ट करने का एक महत्त्वपूर्ण कारण क्रियायोग है। इस क्रियायोग को जीवन के साथ जोड़कर चलना प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है। चाहे लौकिक क्षेत्र में हो या आध्यात्मिक क्षेत्र में हो। दोनों के लिए क्रियायोग अमोघ शस्त्र है।

महर्षि वेदव्यास आगे लिखते हैं कि-

सर्व एवामी क्लेशा अविद्याभेदाः।
कस्मात्? सर्वेष्वविद्यैवाभिप्लवते।

अर्थात् ये सारे क्लेश अविद्या के ही भेद हैं। कैसे? क्योंकि सभी क्लेशों में अविद्या ही व्याप्त हो कर रहती है। अभिप्राय यह है कि चाहे अस्मिता क्लेश हो, चाहे राग क्लेश हो, चाहे द्वेष क्लेश हो, चाहे अभिनिवेश क्लेश हो इन सब के मूल में मिथ्याज्ञान ही कार्य करता है। मिथ्याज्ञान को ही अविद्या कहते हैं। इसलिए सभी क्लेशों में अविद्या व्याप्त होकर रहती है, ऐसा कहा गया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

यदविद्यया वस्त्वाकार्यते तदेवानुशेरते क्लेशा विपर्यास प्रत्यकाले उपलभ्यन्ते क्षीयमाणां चाविद्यामनु क्षीयन्त इति।

अर्थात् जो भी वस्तु या व्यक्ति अविद्या से युक्त होते हैं उनके पीछे-पीछे बाकि क्लेश भी अनुसरण करते हुए उनसे जुड़ जाते हैं। क्योंकि जब अविद्या रूपी मिथ्याज्ञान जुड़ा रहता है तब मनुष्य को अस्मिता होती है, राग उत्पन्न होता है, द्वेष होने लगता है, अभिनिवेश से युक्त होने लगता है। मिथ्याज्ञान की उपस्थिति में ही बाकि सब क्लेश होने लगते हैं। यदि अविद्या रूपी मिथ्याज्ञान नष्ट हो जाता है, तो बाकि क्लेश भी उस अविद्या के पीछे-पीछे नष्ट हो जाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पाञ्चों क्लेशों में अविद्या की मुख्यता है। इसीलिए अविद्या को उत्पत्ति (प्रसवभूमि) स्थान कहा जाता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिससे वे गुणवान् हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

।। ओ३म् ।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द दर्शन का विश्वव्यापी प्रभावः- सस्ता साहित्य मण्डल ने 'हमारी परम्परा' नाम से एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। इसके संकलनकर्ता अथवा सम्पादक प्रसिद्ध गाँधीवादी श्री वियोगीहरि जी ने आर्यसमाज विषय पर भी एक उत्तम लेख देने की उदारता दिखाई है। उनसे ऐसी ही आशा थी। वे आर्यसमाज द्वेषी नहीं थे। इन पंक्तियों के लेखक से भी उनका बड़ा स्नेह था। प्रसंगवश यहाँ बता दें कि आप स्वामी सत्यप्रकाश जी का बहुत सम्मान करते थे।

इस ग्रन्थ में छपे आर्यसमाज विषयक लेख के लेखक आर्य पुरुष यशस्वी हिन्दी साहित्यकार स्वर्गीय श्री विष्णु प्रभाकर जी हैं। आपने इसमें एक भ्रमोत्पादक बात लिखी है जिसका निराकरण करना हम अपना पुनीत व आवश्यक कर्त्तव्य मानते हैं। आपने लिखा है कि आर्यसमाज के समाज सुधार सम्बन्धी कार्यों का जितना प्रभाव पड़ा है वैसा प्रभाव आर्यसमाज के दर्शन का नहीं पड़ा। हम इस भ्रमोत्पादक कथन के लिए मान्य विष्णु प्रभाकर जी को कतई दोष नहीं देते। उनका कथन इस दृष्टि से यथार्थ है कि ऋषि-दर्शन का जितना प्रचार होना चाहिए था उतना प्रचार इस समय नहीं हो रहा है। एक भावनाशील आर्य होने के नाते आपने जो अनुभव किया सो ठीक है। तथ्य यही है कि आर्यसमाज के नेताओं की तीन पीढ़ियों ने असह्य दुःख कष्ट झेलकर, जानें वारकर, रक्तरंजित इतिहास रचकर ऋषि दर्शन की संसार पर अमिट व गहरी छाप लगाई। चौथी पीढ़ी आन्तरिक शत्रु की घेराबन्दी में फंसकर हतोत्साहित ही नहीं हुई पूर्णतया पराजित व असहाय हो गई।

पराभव कैसे हुआ?:- यह घेराबन्दी संस्थावादियों या स्कूल पन्थियों ने की। आर्यसमाज संस्थावाद के कीच-बीच फंसकर शिक्षा व्यापार मण्डल का रूप धारण कर गया। वैदिक दर्शन का प्रचार तो कुछ व्यक्ति तथा कुछ ही संस्थायें कर रही हैं। यहाँ पहली तीन पीढ़ी के महापुरुषों के कुछ नाम देकर उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करना हमारा कर्त्तव्य बनता है।

तीन पीढ़ियों के आग्नेय नेताः- पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और वीर शिरोमणि पं. लेखराम प्रथम पीढ़ी की दो विभूतियाँ थीं।

श्री स्वामी नित्यानन्द महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द महाराज, स्वामी दर्शनानन्द महाराज, स्वामी योगेन्द्रपाल, पं. गणपति शर्मा, आचार्य रामदेव दूसरी पीढ़ी के तपस्वी सर्वस्व त्यागी मिशनरी नेता थे।

महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. धर्मभिक्षु, पं. रामचन्द्र देहलवी, भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि, पं. गंगाप्रसाद द्वय, आचार्य चमूपति, वीर शिरोमणि श्याम भाई, क्रान्तिवीर नरेन्द्र, कर्मवीर लक्ष्मण आर्योपदेशक, कुँवर सुखलाल, स्वामी अभेदानन्द, पं. अयोध्याप्रसाद तीसरी पीढ़ी के समर्पित नेता थे।

चौथी पीढ़ी के नेता जोड़-तोड़ वादी कुर्सी भक्त, चुनाव तनाव के चक्करों में उलझकर मिशन को गौण बनाने का कलङ्क लेकर संसार से गये। ये लोग शिक्षा व्यापार मण्डल के सुनियोजित संगठन का सामना न कर पाये। गुरुकुल भी निष्प्राण हो गये। बड़ों से सम्पदा तो अपार मिल गई परन्तु न तो श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर का स्थान कोई संस्था ले पाई और न स्वामी स्वतन्त्रानन्द के रिक्त स्थान की पूर्ति ही समाज कर पाया।

भूमि के गुरुत्व आकर्षण का नियमः- तथापि यह मानना पड़ेगा कि पहली तीन पीढ़ियों ने इतना ठोस और व्यापक प्रचार किया कि **सकल विश्व के वैचारिक चिन्तन तथा व्यवहार में भूमि के गुरुत्व आकर्षण के नियम के सदृश महर्षि दयानन्द के गुरुत्व आकर्षण का नियत ओतप्रोत है।** जैसे यह नियम सब मानवीय गतिविधियों में ओतप्रोत है परन्तु दिखाई नहीं देता ठीक इसी प्रकार सब मत पन्थों के मानने वालों की सोच और व्यवहार में महर्षि दयानन्द का दर्शन ओतप्रोत है। यह छाप और प्रभाव भले ही देखने वालों को दिखाई न दे परन्तु इतिहास इसकी साक्षी दे रहा है। यह सब कुछ आपके सामने है। हाँ! हमें यह तो मान्य है कि अन्धविश्वासों की अन्धी आँधी सब मत पन्थों को उड़ाकर ले जाती दीख रही है। लीजिये महर्षि दयानन्द जी महाराज के वैदिक दर्शन को दिग्विजय के कुछ तथ्य कुछ बिन्दु इस लेखमाला में देते हैं:-

शैतान कहाँ है?:- ईसाई तथा इस्लामी दर्शन का आधार शैतान के अस्तित्व पर है। शैतान सृष्टि की उत्पत्ति के समय से शैतानी करता व शैतानी सिखलाता चला आ

रहा है। उसी का सामना करने व सन्मार्ग दर्शन के लिए अल्लाह नबी भेजता चला आ रहा है। मनुष्यों से पाप शैतान करवाता है। मनुष्य स्वयं ऐसा नहीं सोचता। पूरे विश्व में आज पर्यन्त किसी भी कोर्ट में किसी ईसाई मुसलमान जज के सामने किसी भी अभियुक्त ईसाई व मुसलमान बन्धु ने यह गुहार नहीं लगाई कि मैंने पाप नहीं किया। मुझ से अपराध करवाया गया है। पाप के लिए उकसाने वाला तो शैतान है।

किसी न्यायाधीश ने भी कहीं यह टिप्पणी नहीं की कि तुम शैतान के बहकावे में क्यों आये? दण्ड कर्ता को ही मिलता है। कर्ता की पूरे विश्व के कानूनविद् यही परिभाषा करते हैं जो सत्यार्थप्रकाश में लिखी है अर्थात् **'स्वतन्त्रकर्ता'** कहिये शैतान कहाँ खो गया? फांसी पर तो इल्मुद्दीन तथा अब्दुल रशीद चढ़ाये गये। क्या यह महर्षि दयानन्द दर्शन की विजय नहीं है? अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इरान, पाकिस्तान व मिश्र में इसी नियम के अनुसार अपराधी फांसी पर लटकाये जाते हैं और कारागार में पहुँचाये जाते हैं।

सर सैयद अहमद का लेख याद कीजिये:- मुसलमानों के सर्वमान्य नेता तथा कुरान के भाष्यकार सर सैयद अहमद खाँ ने अपने ग्रन्थ में एक कहानी दी है। एक मौलाना को सपने में शैतान दीख गया। मौलाना ने झट से उसकी दाढ़ी को कसकर पकड़ लिया। एक हाथ से उसकी दाढ़ी को खींचा और दूसरे हाथ से शैतान की गाल पर कस कर थप्पड़ मार दिया। शैतान की गाल लाल-लाल हो गई। इतने में मौलाना की नींद खुल गई। देखता क्या है कि उसके हाथ में उसी की दाढ़ी थी जिसे वह खींच रहा था और थप्पड़ की मार से उसी का गाल लाल-लाल हो गया था।

इस पर सर सैयद की टिप्पणी है कि शैतान का अस्तित्व कहीं बाहर नहीं (खारिजी वजूद) है। तुम्हारे मन के पाप भाव ही तुम से पाप करवाते हैं। अब प्रबुद्ध पाठक अपने आपसे पूछें कि यह क्रान्ति किसके पुण्य प्रताप से हो पाई? यह किसका प्रभाव है? मानना पड़ेगा कि यह उसी ऋषि का जादू है जिसने सर्वप्रथम शैतान वाली फ़िलास्फ़ी की समीक्षा करके अण्डबण्ड-पाखण्ड की पोल खोली।

'जवाहिरे जावेद' के छपने पर:- देश की हत्या होने से पूर्व एक स्वाध्यायशील मुसलमान वकील आर्य सामाजिक साहित्य का बड़ा अध्ययन किया करता था। उस पर महर्षि के वैदिक सिद्धान्त का गहरा प्रभाव पड़ता गया परन्तु एक वैदिक मान्यता उसके गले के नीचे नहीं उतर रही थी। जब जीव व प्रकृति भी अनादि हैं, इन्हें परमात्मा ने उत्पन्न नहीं किया तो फिर परमात्मा इनका स्वामी कैसे हो गया? प्रभु जीव व प्रकृति से बड़ा कैसे हो गया? तीनों ही तो समान आयु के हैं। न कोई बड़ा और न ही छोटा है।

आचार्य चमूपति की मौलिक दार्शनिक कृति 'जवाहिरे जावेद' के छपते ही उसने इसे क्रय करके पढ़ा। पुस्तक पढ़कर वह स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पास आया। महाराज के ऐसे कई मुसलमान प्रेमी भक्त थे। उसने स्वामी जी से कहा कि आर्यसमाज की सब मान्यताएँ मुझे जँचती थीं, अपील करती थीं परन्तु प्रकृति व जीव के अनादित्त्व का सिद्धान्त मैं नहीं समझ पाया था। पं. चमूपति जी की इस पुस्तक को पढ़कर मेरी सब शंकाओं का उत्तर मिल गया।

मित्रो! कहो कि यह किस की दिग्विजय है। इसी के साथ यह बता दें कि दिल्ली के चाँदनी चौक बाजार में किसी गली में एक प्रसिद्ध मुस्लिम मौलाना महबूब अली रहते थे। मूलत: आप चरखी दादरी (हरियाणा) के निवासी थे। आपने भी यह अद्भुत पुस्तक पढ़ी। फिर आपने एक बड़ा जोरदार लेख लिखा। श्री सत्येन्द्र सिंह जी ने हमें उस लेख का हिन्दी अनुवाद करने की प्रेरणा दी। अब समय मिलेगा तो कर देंगे। इस लेख में पण्डित जी के एतद्विषयक तर्कों को पढ़कर मौलाना ने सब मौलवियों से कहा था कि **यदि प्रकृति व जीव के अनादित्व को स्वीकार न किया जावे तो कुरान वर्णित अल्लाह के सब नाम निरर्थक सिद्ध होते हैं।** मौलाना की यह युक्ति अकाट्य है। कैसे? अल्लाह के कुरान में ९९ नाम हैं यथा न्यायकारी, पालक, मालिक, अन्नधन (रिजक) देने वाला आदि। अल्लाह के यह गुण व नाम भी तो अनादि हैं। जब जीव नहीं थे तो वह किसका पालक, मालिक था? किसे न्याय देता था? प्रकृति उत्पन्न नहीं हुई थी तो जीवों को देता क्या था? तब वह स्रष्टा (खालिक) कैसे था? किससे सृजन करता था? मौलाना की बात का प्रतिवाद कोई नहीं कर सका। अब प्रबुद्ध पाठक निर्णय करें कि यह किस की छाप है? यह वैदिक दर्शन की विजय है या नहीं?

मरयम कुमारी थी क्या?:- मुसलमान व ईसाई दोनों ही हज़रत ईसा का जन्म कुमारी मरयम से मानते आये हैं। अब विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रैण्ड रस्सल तथा सर सैयद की कोटि के विचारक ऐसा नहीं मानते। सर

सैयद अहमद खाँ ने तो लाहौर के एक पठित मुस्लिम युवक के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री ईसा के जन्म विषयक तर्क भी वही दिया जो पं. लेखराम जी ने कुल्लियात आर्य मुसाफिर में दिया है। अमेरिका से प्रकाशित एक पुस्तक में कई युवा पादरियों ने अनेक ऐसे-ऐसे वैदिक विचारों को स्वीकार किया है।

पुराण व्यासकृत नहीं:- हरिद्वार के सन् १८७९ के कुम्भ तक ऋषि विरोधियों का सबसे बड़ा सनातनी सेनापति पं. श्रद्धाराम फिलौरी था। वह ऋषि की शत्रुता में काशी वालों से भी तब तक कहीं आगे था। उसने लिखा है कि १८ पुराण व्यासकृत नहीं।[१] यह सन्देश इस युग में सर्वप्रथम ऋषि ने सुनाया। यह छाप ऋषि की वैदिक विचारधारा की नहीं तो किसकी है?

वेद संहितायें चार ही हैं:- पौराणिक तो उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ सबको वेद ही मानते थे। महर्षि का घोष था कि चार संहितायें ही ईश्वरीय वाणी हैं। त्रिवेदी और चतुर्वेदी ब्राह्मण तो पाये जाते हैं परन्तु कई विद्वानों को सात उपनिषदें कण्ठाग्र हैं फिर वे सप्तवेदी और आठ-दस उपनिषदों के विद्वान् अष्टवेदी, दशवेदी और एकदशवेदी क्यों नहीं? अमेरिका से प्रकाशित Secret Teachings of The Vedas के ईसाई लेखक ने तथा डॉ. अविनाशचन्द्र वसु सरीखे सब लेखकों ने चार संहिताओं को ही वेद माना है। यह किसके पुण्य प्रताप का फल है।

वेद के यौगिक अर्थ:- वेद भाष्यकारों को महर्षि ने आर्ष ग्रन्थों के आधार पर वेदभाष्य करने के लिये यौगिक अर्थों की कुञ्जी दी। Humans From The Rigveda पुस्तक के अमेरिकन लेखक ने भी डंके की चोट से महर्षि की वेदभाष्य की इस विधा को स्वीकार किया है। कौन है जो इस मूलभूत आर्ष मान्यता की इस दिग्विजय को महर्षि दयानन्द का विश्वव्यापी प्रभाव न मानेगा?

न्याय की रात या न्याय का दिन:- ईसाई मुसलमान सभी प्रलय की रात (या दिन) को ईश्वरीय न्याय के सिद्धान्त को मानते आये हैं। इसी को अंग्रेजी में Day of Judgement कहा जाता है। अब डॉ. गुलाम जेलानी की लोकप्रिय पुस्तकों में इस्लाम का नया दार्शनिक दृष्टिकोण सामने आया है। वह यह घोषणा कर रहे हैं कि अल्लाह ताला प्रतिपल न्याय करता है। जिसकी आँखें हैं वे देख रहे हैं कि सारे संसार पर ऋषि की दार्शनिक छाप का गहरा प्रभाव है। आर्यसमाज की वेदी से ही दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रचार बन्द होने से स्कूल खोले, नारी उद्धार किया, स्वराज्य के मन्त्र द्रष्टा की रट लगाने वालों के दुष्प्रचार को प्रमुखता मिलने से भ्रामक विचार फैल गया कि आर्यसमाज के दार्शनिक विचारों का संसार पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

टिप्पणी

१. द्रष्टव्य सत्यामृतप्रवाह लेखक पं. श्रद्धाराम जी।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

परोपकारी के सम्बन्ध में घोषणा

प्रकाशन - परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

संपादक	-	धर्मवीर	**मुद्रक का नाम**	-	श्री मोहनलाल तँवर,
नागरिकता	-	भारतीय	**पता**	-	वैदिक यन्त्रालय,
पता	-	केसरगंज, अजमेर			केसरगंज, अजमेर
प्रकाशक	-	धर्मवीर	**प्रकाशन अवधि**	-	पाक्षिक
नागरिकता	-	भारतीय			
पता	-	कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर			

मैं, धर्मवीर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

फरवरी २०१५ **प्रकाशक : धर्मवीर**

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

अवतारवाद का अन्त होगा?

- रामनिवास गुणग्राहक

अवतारवाद की अनिष्टकारी कल्पना जिसने भी कभी की होगी, तब उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि एक दिन कोई भी यूँ ही मुँह उठाकर स्वयं को परमात्मा का अवतार घोषित कर देगा। अवतारवाद की अवधारणा चाहे जब से चली हो, लेकिन प्रतीत होता है कि विगत ५०-६० वर्षों के कालखण्ड में इस अवतारवाद ने कुछ अधिक ही उन्नति कर ली है। एक समय था जबकि शंकराचार्य से लेकर सन्त तुलसी तक सब साधु-महात्मा भक्त बनकर ही आनन्द की अनुभूति कर लेते थे, स्वामी विवेकानन्द तक को भगवान बनने की न सूझी। आज की बात करें तो लगता है भक्त बनने में कोई अधिक सुख शेष नहीं रहा, जिसे देखो भगवान बनने में लगा हुआ है। सम्भवत: पुरानी पीढ़ी के धर्मशील लोगों को स्मरण हो कि सन् १९७० के आस-पास एक पूरा परिवार ही विभिन्न परमात्माओं का अवतार बनकर भक्त मण्डली की सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे थे। सन् १९५४ में एक व्यक्ति ने- 'स्वामी हंस महाराज' नाम रखकर स्वयं को श्री कृष्ण का अवतार घोषित कर दिया। इनकी पत्नी को 'जगत् जननी' की उपाधि मिल गई। इस जगत् -जननी ने चार पुत्रों को जन्म दिया और चारों ही अवतार बन गये। बड़ा पुत्र सत्यपाल- 'बाल भगवान' बनकर 'सन्तलोक के स्वामी' कहलाये। दूसरे महीपाल 'शंकर के अवतार' बनकर 'भोले भण्डारी' के नाम से प्रसिद्ध हुए। तीसरे धर्मपाल-प्रजापति ब्रह्म के अवतार बनकर भक्त मण्डली में चक्रवर्ती राजा के नाम से विख्यात हुए। सबसे छोटे प्रेमपाल ने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' घोषित करके देश-विदेशों में मनमानी लीलाएँ कीं।

इनकी लीला स्थलियों में इंग्लैण्ड और अमेरिका का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वैसे तो ये गोरे भक्त-भक्तिनों के साथ देश-विदेश में खूब आते-जाते रहते थे, लेकिन नवम्बर १९७२ में लगभग ९०० गौरांग भक्त-भक्तिनों के साथ पालम हवाई अड्डे पर उतरे तो स्वयं तो कुछ विशेष शिष्य-शिष्याओं के साथ राल्स रॉयस कार में निकल गए। इनका निजी सचिव बिहारीसिंह कस्टम अधिकारियों से सामान लेने गया तो कस्टम वालों ने एक बक्स की चाबी माँगी। चाबी तो पूर्ण परमात्मा ले उड़े थे, जब उनसे मँगाकर बॉक्स खोला गया तो उसमें दस लाख रुपये के सोना, हीरे व डॉलर आदि निकले। परमात्मा की चोरी पकड़ी गई। इतना ही नहीं एक वर्ष पूर्व १९७१ में इनके भक्तों ने भगवान की एक पत्रकार वार्ता रखी जिसमें आपने स्वयं को 'पूर्ण परमात्मा' कहते हुए यह भी घोषणा की कि 'मैं हिन्दू नहीं हूँ।' अगले दिन समाचार पत्रों में इस वार्ता का विवरण छापा तो नवभारत टाइम्स में छपे कुछ शब्दों को लेकर इनके भक्त कुपित हो गये और नवभारत टाइम्स के कार्यालय पर पथराव किया जिसमें कई घायल हुए और एक सिपाही का प्राणान्त हो गया।

हमारे अवतारवादी बन्धु तो धन्य हो गये होंगे, इतने भगवानों को एक ही समय व एक ही परिवार में पाकर। पता नहीं क्यों सनातन धर्म वालों को यह सब अच्छा नहीं लगा। मेरठ के कट्टर सनातनधर्मी भक्त श्री रामशरण दास जी लिखते हैं- 'भारत में लगभग ढ़ाई सौ से ऊपर अवतार हैं और मैं सैकड़ों से भेंट कर चुका हूँ..... जो अपने को भगवान श्री राम का अवतार तो कोई अपने को भगवान श्री कृष्ण का, कोई अपने को भगवान श्री शंकर का, तो कोई स्वयं को भगवती श्री दुर्गा का अवतार बता-बताकर डोल रहे हैं और लूट रहे हैं स्वयं पर ब्रह्म परमात्मा बनकर।..... हाय-हाय कैसे रक्षा होगी मेरे इस देश की? इस महान् परम पवित्र हिन्दू जाति की इन महान् कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों से?' सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री और केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के मन्त्री स्वामी चरणदास जी महामण्ड़लेश्वर ने गाँधी मैदान में एक सार्वजनिक सभा के अध्यक्षीय भाषण में अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहा था- केवल दिल्ली में पिछले ८-१० वर्षों से १४ ढ़ोंगी व्यक्ति हिन्दुओं में बड़े हो गये हैं जो अपने को अवतार कहते हैं और हिन्दू धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं।

भक्त रामशरण दास जी- 'धर्म कालनेमि पाखण्डी नकली अवतारों की चर्चा करते हैं। प्रश्न होता है कि क्या कोई असली अवतार भी होता है? क्या कोई भी सनातनधर्मी विद्वान्, साधु-संन्यासी या धर्माचार्य सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त परमात्मा का असली अवतार प्रमाणित कर सकता है? जब से हमारे कथित सनातनधर्मी सच में पुराणपन्थी धर्म गुरुओं ने पूर्ण परमात्मा को भौतिक शरीरधारी बना दिया, तब से इस

अवतारवाद के पाखण्ड ने संसार के विभिन्न क्षेत्रों में ईश्वर पुत्रों, पीर-पैगम्बरों की एक नई शृंखला का बीजारोपण कर दिया यही बीजारोपण आज विकृति की सीमा पार करता हुआ कथित सन्त रामपालदास पर आकर पहुँच गया। अगर अब भी हमारे सनातनधर्मी इस पाखण्ड के विरुद्ध खड़े न हुए तो आगे चलकर इसका और भी कुत्सित चेहरा हमारे सामने आकर रहेगा। भर्तृहरि ने सच कहा है-

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः।

अर्थात् विवेक भ्रष्ट व्यक्ति व समाज का हर दिशा व हर दृष्टि से पतन ही होता है। इस संसार का एक अनुभव सिद्ध सिद्धान्त है कि कोई वस्तु हमारे लिए जितनी उपयोगी, लाभदायक व कल्याणकारी होती है, उसका दुरुपयोग उतना ही घातक व अकल्याणकारी होता है। आयुर्वेद के ऋषि लिखते हैं-

प्राणाः प्राणभृतां अन्नं तद् अयुक्त्या निहन्ति असून्।
विषं प्राणहरं तत् च, युक्तियुक्तं रसायनम्।।

अर्थात् अन्न प्राण का भरण-पोषण करने वाला है। अन्न गलत ढंग से खाया जाये तो विष बनकर प्राणघातक बन जाता है और युक्तियुक्त ढंग से खाया जाये तो रसायन का काम करता है।

अन्न हमारे जीवन का आधार है- '**अन्नं वै प्राणिनां प्राणः**', '**अन्नं वै ब्रह्म तद् उपासीत्**' जैसे ऋषि वचन इसकी पुष्टि करते हैं। सोचने की बात है कि ऋषियों की दृष्टि में अन्न का दुरुपयोग प्राण-पोषण के स्थान पर प्राण-घातक परिणाम देता है। हम जाने-अनजाने में अन्न का दुरुपयोग करके अनेक प्रकार की भयंकर बीमारियों का शिकार होते रहते हैं। यही स्थिति धर्म और ईश्वर के सम्बन्ध में है। सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् परमात्मा को देह के बन्धन में डालकर, एक देशी बनाकर पिछले तीन-चार हजार वर्षों से हमारे धर्मगुरु, धर्माचार्य ईश्वर और धर्म का जो निजी स्वार्थों के लिए जो भयंकर दुरुपयोग कर रहे थे, उसका परिणाम तो आसाराम और रामपाल के रूप में आना ही था। सारे सनातनधर्मी कहलाने वाले हिन्दू पौराणिक यह बता दें कि श्रीराम और श्रीकृष्ण परमात्मा का अवतार हो सकते हैं तो आसाराम और रामपाल क्यों नहीं हो सकते? जब पुराणपन्थी बिना सिद्धान्त, बिना तर्क और बिना वेद शास्त्रों के प्रमाण दिये, श्री राम-श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार मानकर पूजा कर-करा सकते हैं तो कबीरपन्थी रामपाल को परमात्मा का अवतार मानकर क्यों नहीं पूज सकते?

हम यहाँ रामपाल और आसाराम की श्रीराम और श्री कृष्ण से तुलना नहीं कर रहे। निःसन्देह मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगेश्वर श्री कृष्ण का जीवन पूर्णतः पवित्र था, वे हर दृष्टि से महापुरुष थे, हम सबके आदर्श थे। प्रश्न यह है कि क्या कोई शरीरधारी परमात्मा हो सकता है? अगर सच में एक घड़े या लोटे में समुद्र का सम्पूर्ण जल आ सकता है तो इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि घड़ा सोने का है या लोहे का। सृष्टि में सर्वत्र नियम-सिद्धान्त ही काम करते हैं, सिद्धान्ततः मनुष्य सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् आदि गुणों से युक्त नहीं हो सकता। निष्कर्षतः हम यह कहना चाहते हैं कि रामपाल और आसाराम का परमात्मा होना निश्चित रूप से एक बहुत बड़ा पाखण्ड है, अन्धविश्वास है तो श्री राम और श्री कृष्ण को परमात्मा का अवतार कहना-मानना भी बहुत बड़ा पाखण्ड और अन्धविश्वास है। हम सबको एक बात गाँठ बाँध लेनी चाहिये कि जब तक श्री राम और श्री कृष्ण आदि महापुरुषों को परमात्मा का अवतार मानकर पूजने, भक्ति करने के पाखण्ड को जीवित रखा जाएगा, तब तक देश और दुनियाँ से बाल योगेश्वर हंस, आसाराम और रामपाल जैसे पाखण्डियों की परम्परा को मिटाया नहीं जा सकेगा। बीज रहेगा तो बेल भी उगेगी-बढ़ेगी और उस पर फूल-फल भी लगेंगे जो आगे बीज भी पैदा करेंगे।

आर्यो! तनिक आप भी अपनी अकर्मण्यता-असफलता पर विचार करना सीख लो। ''हम ये कर रहे हैं, हम वो कर रहे हैं।'' कहकर अपनी पीठ थपथपाने वालो। 'हम क्या नहीं कर पा रहे' का भी कभी चिन्तन कर लिया करो। ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के हृदय की आग की एक चिनगारी को अपने हृदय में सुलगने-धधकने का अवसर देकर देखो। वे कोई दूसरी दुनियाँ के पुरुष नहीं थे। इसी समाज और राष्ट्र की ऐसी ही परिस्थिति में पल-बढ़ कर उनका व्यक्तित्त्व बना था। उन्होंने जो कुछ लिया यही से लिया। समाज व राष्ट्र की लगभग ऐसी ही दुर्दशा तब थी, जिसे देखकर वे चैन की नींद तक नहीं ले पाते थे। एक हम हैं कि सब कुछ देख-सुनकर भी कबूतर की तरह आँख बन्द कर लेते हैं, शतुरमुर्ग की तरह धरती में मुँह धँसा लेते हैं- सोचते हैं संकट टल गया। आर्यो! हमारी अनदेखी से संकट टल जाता तो धरती तल पर कभी कोई समस्या, कोई संकट रहता ही नहीं। आप मानो या न मानो, सच यह है कि भारत की हर समस्या, हर संकट आर्यों के अनार्यपन की उपज हैं। ऋषि दयानन्द के

अनुयायी कहलाने वाले सिद्धान्तहीन लोगों के कारण ही वेद विद्या के प्रचार-प्रसार का अभियान निष्प्राण होकर रह गया है। यह कोई छोटा अपराध नहीं है, आर्यो! अपने जीवन की उपलब्धियों का सच्चे हृदय से आंकलन करो। देखो कि हमने झूठे और खोखले मान-सम्मान के अलावा आर्यसमाज में आकर क्या पाया?

पत्थर जोड़ने (भवन बनाने) और पत्थरों पर नाम लिखाने से आगे बढ़कर जीवन-निर्माण के क्षेत्र में हमारी उपलब्धि क्या रही? आर्यो! जीवन को घाटे का सौदा मत बनाओ, भवन-निर्माण से जीवन-निर्माण अधिक पुण्यप्रद कर्म है। देश में व्याप्त धार्मिक-पाखण्ड, अन्धविश्वास, भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिगत विद्वेष और पारिवारिक बिखराव- उन सब रोगों की एक ही अमोघ औषधि है और वह है वेद विद्या का प्रचार-प्रसार। यह काम केवल और केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। संकल्प लो कि हम स्वयं वेद पढ़ेंगे और वेद विद्या के प्रचार-प्रसार में ही अपना तन, मन, धन और समय लगायेंगे। ध्यान रखें जब तक हम स्वयं वेद पढ़ना प्रारम्भ नहीं करेंगे मनोविज्ञान का सिद्धान्त है कि तब तक हम वेद के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। वेद प्रचार करने-कराने का दिखावा तो कोई भी कर सकता है, लेकिन सच्चे अर्थों में वेद विद्या के प्रचार-प्रसार में सक्रिय सहयोग व समर्थन देकर आर्य होने का सच्चा प्रमाण, सच्चा आदर्श वही प्रस्तुत कर सकता है जो स्वयं नित्य वेद स्वाध्याय करते हो। मित्रो! क्या आप वेद-स्वाध्याय का व्रत लेकर अपने व विश्व के कल्याण करने की दिशा में छोटा-सा दिखने वाला एक बड़ा कदम उठा रहे हो? यदि हाँ तो लेखक की हर्दिक शुभकामनाएँ सदा आपके साथ हैं, ईश्वर की कृपा, करुणा और दया सदैव आपका मार्ग प्रशस्त करें!!

- महर्षि दयानन्द स्मृति भवन, जोधपुर, राजस्थान
चलभाष- ०७५९७८९४९९१

वेद-गोष्ठी वर्ष २०१४ के पुरस्कार हेतु निबन्ध आमन्त्रित हैं

मुनि स्थिर निधि की ओर से वेद-गोष्ठी में पढ़े जाने वाले निबन्धों को पुरस्कृत करने की योजना है। पुरस्कार राशि निम्न प्रकार निर्धारित है-

प्रथम पुरस्कार - ६१००.०० रु.

द्वितीय पुरस्कार - ४१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार - ३१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार नव लेखकों ३० वर्ष की आयु तक के लिए निश्चित किया गया है।

जिन विद्वानों ने इस वर्ष ऋषि मेले के अवसर पर सम्पन्न वेद-गोष्ठी में निबन्ध वाचन किया है। यदि वे अपने निबन्ध में संशोधन करने के इच्छुक हैं तो वे १ मार्च २०१५ तक अपने संशोधित निबन्ध संयोजक वेद-गोष्ठी, परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेज सकते हैं।

यदि कोई विद्वान् अभी तक अपना निबन्ध नहीं भेज पाये हैं वे भी १ मार्च २०१५ तक इसी विषय पर निबन्ध लिखकर भेज सकते हैं।

पश्चात् निबन्ध चयन समिति को भेजे जायेंगे। उनका निर्णय अन्तिम और मान्य होगा। पुरस्कार ऋषि मेला समारोह में प्रदान किये जायेंगे।

वेद-गोष्ठी का विषय ''**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**''

- संयोजक वेद-गोष्ठी

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

पुस्तक-समीक्षा

सत्यार्थप्रकाश का आजतक का सर्वाधिक श्रमयुक्त शोध संस्करण

पुस्तक का नाम - सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित (शोध संस्करण, दो भागों में)
सम्पादक एवं शोधकर्ता - डॉ. सुरेन्द्र कुमार (मनुस्मृति भाष्यकार)
पृष्ठ संख्या - पूर्वार्ध ५१२, उत्तरार्ध
मूल्य - दोनों भागों का १२००/-
प्रकाशक - सत्यधर्म प्रकाशन द्वारा आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक कैंसर हस्पताल गुरुकुल झज्जर, रेवाड़ी रोड, जिला झज्जर (हरियाणा)

सुन्दर कागज और आकर्षक साज-सज्जा में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश का यह अब तक का सर्वाधिक श्रमयुक्त और शोधपूर्ण संस्करण है। सन् १८७५ में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) का संशोधन एवं पुनः लेखन करा महर्षि जी ने द्वितीय संस्करण तैयार कराया, जो सन् १८८४ में प्रकाशित हो पाया। लिपिकरों और मुद्रणकर्त्ताओं के प्रमाद से उसमें अवशिष्ट भाषागत त्रुटियों के संशोधन की शुरुआत उसकी तृतीय आवृत्ति से ही हो गई थी। परोपकारिणी सभा ने उसके लिए समय-समय पर कई समितियाँ बनाई जिसमें आर्यसमाज के दिग्गज विद्वान् रहे। जब स्वतन्त्र संस्करण छपने लगे तो स्वामी वेदानन्द सरस्वती, पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती सदृश विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से संशोधन किये। सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय आर्यसभाओं, ट्रस्टों, न्यासों, गुरुकुलों तथा अन्य प्रकाशकों ने भी स्वेच्छापूर्वक संशोधन करके अपने संस्करण प्रकाशित किये। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि सभी संस्करण एक-दूसरे से भिन्न होते गये और एक प्रकाशक के सभी संस्करण भी आपस में नहीं मिलते। सत्यार्थप्रकाश का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो, इस भावना से परोपकारिणी सभा ने अन्य प्रकाशकों को प्रकाशन की छूट दी थी किन्तु उन्होंने इस छूट का दुरुपयोग किया और अन्ततः कुछ भी संशोधन करने का अपना अधिकार समझ लिया। सबके संशोधन विषयक मतान्तर होने से यह विषय विवाद का रूप लेता गया।

इन सब विवादों को समाप्त करने के लिए परोपकारिणी सभा ने १८८४ के द्वितीय संस्करण और उसकी मुद्रणप्रति के ऋषि संशोधित पाठों को ग्रहण करके द्वितीय संस्करण के मूल-हस्तलेख को आधार बनाकर ३७वाँ संस्करण प्रकाशित किया। यह मूल-हस्तलेख ऋषि द्वारा बोल कर लिखाया गया था अर्थात् यह उनकी वाणी है और फिर दो बार ऋषि ने अपने हाथ से उसका संशोधन भी किया हुआ है। अधिकांश सम्पादकों ने इसी के पाठों के आधार पर द्वितीय संस्करण में संशोधन भी किये हैं। दुःख की बात यह है कि कुछ आर्य विद्वानों ने एक गुट बनाकर उस ऋषि-वाणी का भी विरोध किया और विवाद को भी बढ़ाया।

अब डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने मूलप्रति, मुद्रणप्रति और द्वितीय संस्करण (१८८४) को मुख्य आधार बनाकर और अन्य २५ से अधिक संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन करके सत्यार्थप्रकाश का पाठ निर्धारण किया है। विशेष उल्लेखनीय बिन्दु यह है कि जहाँ-जहाँ प्रतियों में और संस्करणों में पाठान्तर या पाठत्रुटि है, उसका टिप्पणी में उल्लेख किया है। पाठक तुलनात्मक परीक्षण करके स्वयं भी जान सकते हैं कि किस सम्पादक या प्रति का क्यों पाठ सही है और क्यों सही नहीं है। इनके अतिरिक्त टिप्पणी में गूढ़ ऐतिहासिक और शंकामय स्थलों पर सप्रमाण प्रकाश डाला है। यद्यपि सम्पादक ने अपने शोध संस्करण में परोपकारिणी के मूलप्रति संस्करण की त्रुटियाँ भी प्रदर्शित की हैं, तथापि उन्होंने अधिकांश समाधान मूलप्रति के आधार पर किये हैं जिनसे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि परोकारिणी का ३७वाँ संस्करण प्रकाशित करने का निर्णय उचित था। यह संस्करण नहीं छपता तो, सत्यार्थप्रकाश विषयक शोध न आगे बढ़ता, न पूर्ण होता।

इस प्रकार इस शोध कार्य से किसी को सहमति-असहमति रखने का अधिकार है परन्तु यह कार्य शोध की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध होगा यह निश्चित है।

सत्यार्थप्रकाश के इतिहास में इस संस्करण में पहली बार यह कार्य किया गया है कि सम्पादक ने पाठकों को महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने हाथ से किये/लिखे संशोधनों से पाठकों को परिचित कराया है। वह इस प्रकार है कि जिन शब्दों या पाठों के नीचे सीधी रेखा अंकित है वे मूलहस्तलेख में महर्षि जी द्वारा संशोधित पाठ हैं। जिन शब्दों/पाठों के नीचे वक्र रेखा अंकित है वे मुद्रण प्रति में संशोधित पाठ हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षिप्ताक्षर

सूची, प्रमाणानुक्रमणी, प्रमुख शब्दानुक्रमणी, ऋषि द्वारा सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत पुस्तकों की अनुक्रमणी, आयतानुक्रमणी आदि दी गई हैं। अन्त में ऋषि के उद्धरणीय-स्मरणीय वचनों का संग्रह भी उपादेय है।

ग्रन्थ के आरम्भ में १५९ पृष्ठ का 'सत्यार्थप्रकाश-मीमांसा' नामक समीक्षा भाग है जिसमें सत्यार्थप्रकाश की रचना का इतिहास, संशोधन-विषयक पक्ष-विपक्ष का विवेचन और प्रमुख संस्करणों के संशोधनों की समीक्षा, सत्यार्थप्रकाश की यथार्थ स्थिति का सप्रमाण दिग्दर्शन, सम्भावित आरोपों अथवा शंकाओं का समाधान, हस्तलेखों का परिचय, महर्षि जी के लिपिकरों और लेखकों द्वारा की गई त्रुटियों आदि विषयों पर सप्रमाण और विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

कितने ही प्रकाशक स्वयं सत्यार्थप्रकाश में संशोधन किये बैठे हैं और दूसरों के संशोधनों का विरोध करते हैं, सम्पादक ने मीमांसा भाग में तथ्य प्रस्तुत करके उनको उनका आइना दिखा दिया है। इतना विस्तृत, गम्भीर और श्रमसाध्य शोध आज तक सत्यार्थप्रकाश पर नहीं हुआ है। पाठक अब यदि सत्यार्थप्रकाश-विषयक किसी विवाद, आरोप, शंका, जिज्ञासा का उत्तर चाहेंगे तो प्रायः वह सब इस शोध संस्करण में मिल जायेगा और वह भी प्रमाणों के साथ। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए डॉ. सुरेन्द्र कुमार बधाई के पात्र हैं। ऐसे शोधग्रन्थ बार-बार नहीं छप पाते, अतः सभी को इसकी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिए।

- डॉ. धर्मवीर, कार्यकारिणी प्रधान,
परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्न पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम		मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट		६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट		४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट		५५०.००
	१७		**योग**	**१६३५.००**

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा
खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
बचत खाता संख्या- 0008000100067176,
बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर
आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के द्वारा भेज सकते हैं।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.....

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१८५.	श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६.	मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७.	योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८.	ध्यान (सी.डी.)	
१९९.	योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०.	ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१.	आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३.	सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४.	वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६.	डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८.	वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१९९.	महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००.	महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201.	The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202.	Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203.	A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204.	An Examination of Vallabha Sect	20.00
205.	Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206.	Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207.	Bhranti Nivarana	35.00
208.	**Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209.	Bhramochhedan	5.00
210.	Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211.	Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212.	Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213.	Dayanand and His Mission	5.00
214.	Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५.	पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६.	जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का नि:शुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमश: हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

तर्क के बिना कोई भी विद्या किसी मनुष्य को नहीं होती और विद्या के बिना पदार्थों से उपयोग भी कोई नहीं ले सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५६

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे। **- सम्पादक**

पिछले अंक का शेष.....

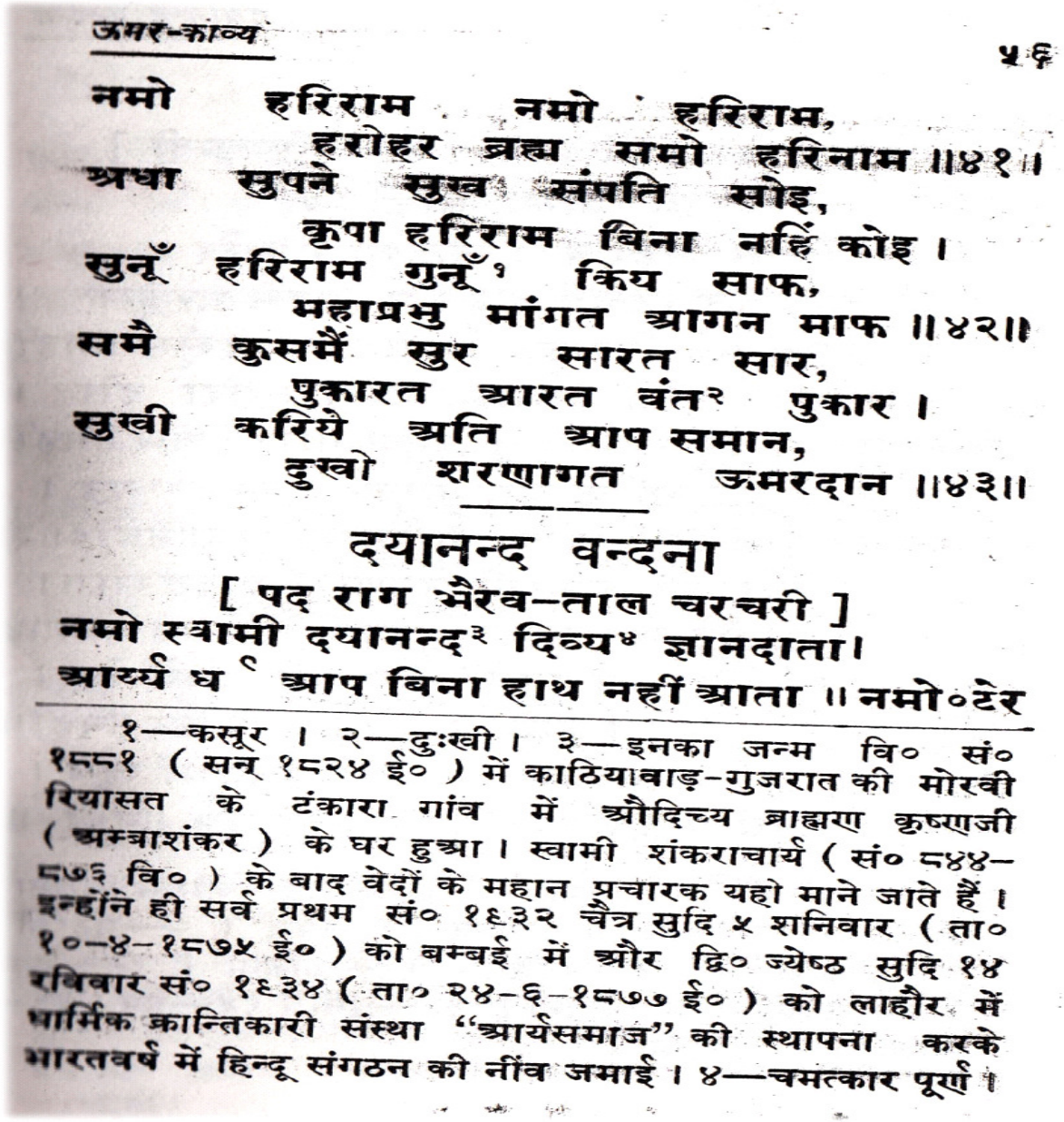

ऊमर-काव्य ५६

नमो हरिराम नमो हरिराम,
हरोहर ब्रह्म समो हरिनाम ॥४१॥
अधा सुपने सुख संपति सोइ,
कृपा हरिराम बिना नहिं कोइ।
सुनूँ हरिराम गुनूँ[1] किय साफ,
महाप्रभु मांगत आगन माफ ॥४२॥
समै कुसमैं सुर सारत सार,
पुकारत आरत वंत[2] पुकार।
सुखी करिये अति आप समान,
दुखो शरणागत ऊमरदान ॥४३॥

दयानन्द वन्दना

[पद राग भैरव-ताल चरचरी]

नमो स्वामी दयानन्द[3] दिव्य[4] ज्ञानदाता।
आर्य्य ध[5] आप बिना हाथ नहीं आता ॥ नमो०टेर

१—कसूर। २—दुःखी। ३—इनका जन्म वि० सं० १८८१ (सन् १८२४ ई०) में काठियावाड़-गुजरात की मोरवी रियासत के टंकारा गांव में औदिच्य ब्राह्मण कृष्णजी (अम्बाशंकर) के घर हुआ। स्वामी शंकराचार्य (सं० ८४४-८७६ वि०) के बाद वेदों के महान प्रचारक यही माने जाते हैं। इन्होंने ही सर्व प्रथम सं० १९३२ चैत्र सुदि ५ शनिवार (ता० १०-४-१८७५ ई०) को बम्बई में और द्वि० ज्येष्ठ सुदि १४ रविवार सं० १९३४ (ता० २४-६-१८७७ ई०) को लाहौर में धार्मिक क्रान्तिकारी संस्था "आर्यसमाज" की स्थापना करके भारतवर्ष में हिन्दू संगठन की नींव जमाई। ४—चमत्कार पूर्ण।

वेद ध्वनी हाट बाट, दुष्टन के थाठ[1] दाठ[2] ,
कलियुग को काट, जुग सत्य ना सुझाता ॥नमो०१
कुल को बनतो कुठार, बंस को देतो बिगार,
चारन[3] बरन चारु[4] , छार[5] में छिपाता ॥नमो०२

१—समूह, थोक। २—उपटना, दबाना। ३—राजपूताने में यह जाति राजपूतों की याचक है जो उनके यशको कविता रूप में प्रकट करती है और ख्यात (इतिहास) पीढियां भी बताती है। ये कुल चार हिस्सों में विभक्त हैं। (१) मारू, (२) काछेला या परजिया, (३) सोरठिया, और (४) तुम्बेल। देश भेद से ये नाम हुए हैं। मारवाड़ यानी राजपूताना, मालवा व सिंध में रहनेवाले चारण "मारू चारण" कहलाते हैं, कच्छ देश के काछेला, सौराष्ट्र यानी काठियावाड़ के सोरठिया और ऐसे ही तुम्बेल जो जामनगर की तरफ बड़ी संख्या में हैं। मारवाड़ में इनके एकसौ बीस गोत हैं इससे चारणों की बिरादरी वीसोतरा या बीसोत्रा भी कहलाती है। ये लोग अपने को देव ऋषि (देवयोनि) की सन्तान और पहिले स्वर्ग (वैकुण्ठ) ही में रहना बताते हैं। महाभारत के अनुसार स्वर्ग से मुराद शायद हिमालय पार त्रिविष्टय (तिब्बत) और उसके पास के देश से हो और सम्भव है इनका असली स्थान वहीं हो। मारवाड़ी भाषा की कविता जो डिंगल कहलाती है उसी में ये लोग अपनी रचना करते हैं। डिंगल (असंस्कृत) बोली का साहित्य ८वीं सदी का मिलता है और ७वीं सदी के महाकवि वाण भट्ट के प्रसिद्ध "कादम्बरी" ग्रंथ में भी इस जाति का वर्णन है। ज्ञात होता है उस समय भी चारणों के गीत और ख्यात प्रचलित थे और इनकी संस्कृत के कवियों (ब्रह्मभट्टों) से प्रतिद्वन्द्विता होने लग गई थी (देखो नागरीप्रचारिणीपत्रिका भाग १ अंक २ पृ० २३१ नया संस्करण सं० १९७० वि०)। ४—अच्छा, सुन्दर। ५—राख।